वार्षिक 150/- रुपये | अक्टूबर 2024 | वर्ष 26 | अंक 12 | पृष्ठ - 28 | मूल्य 15/-रु.

गोसम्पदा

लड्डू अंक

तिरुपति बालाजी के 'प्रसाद' का मामला

घी (लड्डू) में चर्बी और कारतूस में चर्बी

सम्पादकीय

तिरुपति बालाजी के 'प्रसाद' का मामला

घी (लड्डू) में चर्बी और कारतूस में चर्बी

सर्वप्रथम मा. न्यायाधीशों (सर्वोच्च न्यायालय) को हार्दिक साधुवाद। उल्लेखनीय है कि गत दिनों उच्चतम न्यायालय द्वारा तिरुपति बालाजी मंदिर के प्रसाद–लड्डू में पशु चर्बी के उपयोग के आरोप की जांच के लिए **"पांच सदस्यीय स्वतंत्र विशेष जांच दल"** गठित कर दिया गया है। यह आदेश इसलिए विशेष महत्व रखता है, क्योंकि सर्वोच्च न्यायालय द्वारा गठित "जांच दल" उस "एसआईटी" का स्थान लेगा जिसका गठन आंध्र प्रदेश सरकार ने तिरुपति मंदिर के लड्डुओं (प्रसाद) को बनाने में पशु चर्बी के उपयोग के आरोपों की जांच के लिए गत 26 सितंबर को किया था।

न्यायमूर्ति मा. बी.आर. गवई और न्यायमूर्ति मा. के.वी. विश्वनाथन की पीठ ने कहा कि एसआईटी में केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) और आंध्र प्रदेश पुलिस के दो–दो अधिकारियों के अलावा "एफ एस एस ए आई" का एक वरिष्ठ अधिकारी भी शामिल किया गया है। पीठ ने कहा कि "हम स्पष्ट करते हैं कि न्यायालय को राजनीतिक युद्ध के मैदान के रूप में उपयोग नहीं होने देंगे, क्योंकि यह विश्व के करोड़ों हिन्दुओं के विश्वास, आस्था और श्रद्धा का विषय है। इसीलिए इस मामले की जांच एक "स्वतंत्र एसआईटी" को सौंपी गई है। पीठ के निर्देशानुसार जांच "सीबीआई" के निदेशक की निगरानी में की जाएगी। वस्तुतः इस अतिशय गंभीर मामले में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा गठित "जांच दल" के द्वारा निर्णय नहीं "न्याय" दिया जाएगा, ऐसा सभी देशवासियों को पूर्ण विश्वास है। हां, यह "न्याय" उसी प्रकार परिलक्षित होना चाहिए जैसा "न्याय" पवित्र–पावन भूमि अयोध्या स्थित भगवान रामलला के प्रकरण में स्पष्टतः दृष्टिगोचर हुआ। ध्यान रहे, घी (लड्डू) में चर्बी मिलाये जाने का मामला अब केवल तिरुपति बालाजी मंदिर तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि देश के महत्वपूर्ण सभी मंदिर–मठ इससे प्रभावित हुए हैं।

अब तो हिन्दुओं के प्रमुख मंदिरों–मठों पर शासकीय नियंत्रण की व्यवस्था पर भी प्रश्न चिह्न लग गया है। वैसे भी इस व्यवस्था के विरोध में पिछले काफी समय से हिन्दुओं के द्वारा मांग की जा रही है कि उक्त भेदभावपूर्ण व्यवस्था (कानून) को अविलंब समाप्त किया जाए, जो वास्तव में समीचीन भी है। घोर आश्चर्य इस बात का है कि स्वतंत्रता प्राप्त होने के बाद ही हिन्दुओं के देश हिन्दुस्थान में ही ऐसे अनेक कानून एक षड्यंत्र के अंतर्गत योजनाबद्ध ढंग से बनाये या बनवाये गये हैं जिनके माध्यम से हिन्दुओं का ही विश्वासघात और छल–कपट पूर्वक सभी प्रकार से शोषण किया जाता रहा है और अभी भी किया जा रहा है। जिस प्रकार मुसलमानों की मस्जिदें एवं ईसाइयों के चर्च उनके समाज के नियंत्रण में ही संचालित किये जाते हैं, क्या उसी प्रकार मंदिरों–मठों को स्वतंत्र रूप से हिन्दू समाज के द्वारा संचालित नहीं किया जाना चाहिए? यह घोर अन्याय हिन्दुओं के साथ ही क्यों और किसलिए? वास्तव में विघटनकारी नीतियां और कानून कांग्रेस के शासनकाल में ही बनाए गये हैं, जिनका उद्देश्य था – "भारत को इस्लामिक देश बनाना।" क्या जवाहर लाल नेहरु, इंदिरा–फीरोज खान (कथनानुसार सुन्नी मुसलमान) और राहुल–प्रियंका की पारिवारिक व सामाजिक पृष्ठभूमि और उनके क्रिया–कलापों से यह स्पष्ट प्रमाणित नहीं होता? सच तो यह है कि "गांधी" शब्द का चोला पहन कर ये पाखंडी देशवासियों को ठग रहे हैं, देश के साथ विश्वासघात कर रहे हैं। क्या यह देशद्रोह जैसा अपराध नहीं है? राहुल के द्वारा "जनेऊ" धारण करना, हिन्दुओं के धार्मिक तीर्थ स्थलों की यात्रा करना, लेकिन भगवान राम–कृष्ण के अस्तित्व को नकारना, दूसरी ओर मुस्लिमों की टोपी पहनना आदि घटनाएं अंततः क्या प्रमाणित करती हैं? क्या कभी किसी ने इनके मुंह से "भारतमाता की जय" और वंदेमातरम का उद्घोष सुना है? अब इस सत्य से सम्पूर्ण देशवासी भली–भांति अवगत हैं। इसलिए सभी हिन्दुओं को जातिगत भेदभाव भूलकर संगठित होना अतिशय आवश्यक है, ताकि सनातन धर्म, संस्कृति, मूल्यों, आस्था और विश्वास की रक्षा की जा सके। साथ ही राष्ट्र को परम वैभवशाली बनाया जा सके।

स्मरण रहे, आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू जी ने घी में चर्बी मिलाये जाने के मामले में राज्य की पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार पर आरोप लगाया है। आशा है इस दुर्भाग्यपूर्ण मामले का सत्य सर्वोच्च न्यायालय द्वारा गठित "जांच दल" यथाशीघ्र देश के समक्ष उजागर करेगा। ऐतिहासिक सत्य तो यह है कि 1857 की क्रांति अंग्रेजों द्वारा कारतूस में गोवंश की चर्बी मिलाए जाने के विरोध स्वरूप ही प्रारंभ हुई थी। तभी से आजादी की लौ प्रज्वलित रही और अंततः 1947 में देश को स्वाधीनता प्राप्त हुई। उल्लेखनीय है कि स्वाधीनता के पूर्व से ही देश के लगभग सभी प्रमुख मंदिरों के अंतर्गत गोवंश (गोशाला) और खेती की जमीन होती थी, जिसके आधार ही भगवान को गाय के विशुद्ध दूध (अमृत), घी और पैदा किये गये अन्न–भोज्य पदार्थों से भोग लगाया जाता था, जो प्रसाद के रूप में भक्तों को बांटा जाता था। दुर्भाग्य से गोवंश–हत्या और गोमांस–भक्षण के दुष्परिणाम स्वरूप आज गाय का शुद्ध दूध और शुद्ध अन्न मिलना बहुत–बहुत कठिन है। वेदों–पुराणों–शास्त्रों के अनुसार गाय के दूध (पूर्णतः सात्विक) और उससे बने भोज्य पदार्थों का ही भगवान को भोग लगाया जाता है, अन्य किसी भी प्राणी के दूध, उसके उत्पादों का नहीं। इसीलिए भारतमाता के ललाट पर लगा गोवंश–हत्या के कलंक को शीघ्रातिशीघ्र मिटाया जाना अतिशय आवश्यक है। अतः अब केन्द्र सरकार का राष्ट्रहित में परम कर्तव्य है कि त्वरित सम्पूर्ण देश में गोवंश–हत्या पर प्रतिबंध लगाए। साथ ही गोवंश पालन–संवर्द्धन को हर प्रकार का सहयोग प्रदान करे। कहा जाता है –देश में दूध–दही की नदियां बहती थीं। देश सोने की चिड़िया था। याद रखें, इस स्वर्णिम पृष्ठभूमि का मूल आधार गोवंश ही था।

(सम्पादक)

गोसम्पदा

वर्ष - 26 अंक-12 अक्टूबर - 2024 पृष्ठ - 28

संरक्षक :
हुकुमचंद सावला जी

अखिल भारतीय गोरक्षा प्रमुख
दिनेश उपाध्याय जी
संकट मोचन आश्रम, सै. 6,
रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22
मो. : 9644642644
ईमेल : gosampada@gmail.com

सम्पादक :
देवेन्द्र नायक
संकट मोचन आश्रम, सै. 6,
रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22
मो. : 8130049868 कार्या. 011-26174732
ईमेल : gosampada@gmail.com

परामर्शदाता : प्रो. गुरुप्रसाद सिंह जी
मो. : 9838900596

प्रकाशक : राजेन्द्र प्रसाद सिंहल जी
मो. : 9810055638

प्रचार-प्रसार प्रमुख : जय प्रकाश गर्ग जी
मो. : 9654414174

व्यवस्थापक : रामानन्द यादव
मो. : 9958710672 कार्या. : 011-26174732

साज-सज्जा : सुमन कुमार

वैधानिक सूचना

'गोसम्पदा' से संबन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 माह के अंदर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में मान्य होंगे

सहयोग राशि
एक प्रति : रु. 15/-
वार्षिक : रु. 150/-
आजीवन : रु. 1500/-

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
गोवंश की उपेक्षा से सनातन संस्कृति परम्परायें, आस्था और विश्वास आहत होगा	04
तिरुपति बालाजी के लड्डू में मिलावट मानवाधिकार का घोर हनन	06
गोविज्ञान परीक्षा का आयोजन	09
गोरक्षा विभाग की काशी प्रांत का प्रशिक्षण वर्ग संपन्न	11
भावी सन्तति के सुखद भविष्य के लिये गोवंश बचाना अतिशय आवश्यक	12
गोरक्षा विभाग, (विहिप) की अखिल भारतीय बैठक सम्पन्न	14
प्रस्ताव	15
मा. रामनाथ कोविंद जी द्वारा पंचगव्य संगोष्ठी का उद्घाटन	18
गोचर भूमि से अतिक्रमण हटाने को लेकर धरना	20
प्रसाद की जांच	21
तिरुपति लड्डू पर प्रश्नचिह्न ?	22
Bovine Mastitis	24
Maintaining an Indian Cow Shed a Guide to Proper Hygiene and Animal Welfared	26

दिनेश उपाध्याय जी को भ्रातृ शोक

गोरक्षा विभाग (विहिप) के अखिल भारतीय गोरक्षा प्रमुख मा. दिनेश उपाध्याय जी के बड़े भाई श्री सुरेश चंद्र शर्मा जी गत 07 अक्टूबर को गोलोकवासी हो गये। वह जिला–हाथरस (उ.प्र.), पोस्ट–रूहेरी के के ग्राम–नगला सुक्खा में रहते थे। गोरक्षा विभाग, विहिप की ओर से उनकी दिवंगत आत्मा के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि।

– संपादक

राजेन्द्र सिंहल (महामन्त्री –भा.गो.र.सं. परिषद)

गोवंश की उपेक्षा से सनातन संस्कृति परम्परायें, आस्था और विश्वास आहत होगा

तिरुपति बालाजी देव स्थानम न्यास ने देशी घी 320 रू. प्रति किलो खरीद कर भोग प्रसाद के लिये उपयोग किया। लैब में जांच होने पर उसमें मांसाहार तत्व (चर्बी) आदि बहुत मात्रा में पाये गये। घी से निर्मित प्रसाद से बहुत दिनों तक भगवान का भोग लगता रहा, जन मानस ग्रहण करता रहा, सभी का धर्म भ्रष्ट हुआ, जिसके दुष्परिणामस्वरूप समाचार पत्रों, टेलिविजन, सोशल मीडिया, राजनीति में कोहराम मचा हुआ है। आइये तत्थ की गहराई में जाकर विश्लेषण करें–

शुद्ध देशी स्थानीय नस्ल की उतम गायें आन्ध्र प्रदेश में पुंगनूर व अंगोल जाति की हैं, जो दुग्ध सामान्यतः 4 से 10 लीटर तक देती हैं। तिरुपति बाला जी के मन्दिर में प्रतिदिन 1400 लीटर के लगभग देशी घी खर्च होता है। गाय के दुग्ध में 4 प्रतिशत फैट होता है, इस प्रकार मन्दिर को शुद्ध घी प्राप्त करने के लिये 35000 लीटर दुग्ध प्रतिदिन चाहिए जो 7000 गायों से प्राप्त हो सकता है। 7000 गायों के लिए 25000 गोवंश पालना आवश्यक है, क्योंकि 7000 गायों के 7000 बछियां–बछड़े होंगे। गायों से दुग्ध निरन्तर मिलता रहे जिसके लिये 11000 गोवंश अतिरिक्त चाहिए। गाय एक ब्यात में 7 से 8 महीने दुग्ध देती है। शुद्ध घी की पुष्टि के लिये 25000 गोवंश पालने की व्यवस्था देव स्थानम न्यास द्वारा करना आवश्यक है, तभी भगवान का भोग शुद्ध घी से लग सकता है। घी का तात्पर्य सनातन धर्म ग्रन्थों में उस घी से है जो दुग्ध को तपाकर, दही जमाकर, विलोकर निकाले गये मक्खन को तपाकर बनाया जाता है।

वर्तमान में डेयरी उद्योग में घी बनाने की प्रक्रिया सनातन संस्कृति

देशी गो दुग्ध में विलक्षण लाभादायी तत्वों के अतिरिक्त स्नेह प्रदार्थ व दिव्य गुणों का प्रभाव रहता है, जिसे पुरातन ऋषियों ने साधना व अनुसंधान से जानकर घी बनाने की वैज्ञानिक पद्धति विकसित की थी। शुद्ध घी बनाने के लिये दो चीजे अनिवार्य हैं – एक देशी गाय का शुद्ध दुग्ध व दूसरा घी बनाने की पद्धति। वास्तव में आस्था, श्रद्धा, विश्वास, संस्कृति और परम्पराओं का कोई भौतिक मूल्य नहीं हो सकता। इसलिए हमें प्राण न्योछावर करके भी उनका संरक्षण, संवर्धन व पोषण करना चाहिए।

के धर्म ग्रन्थों के अनुसार नहीं है, उसमें दुग्ध का फैट व अन्य पदार्थ अलग करके घी बनाया जाता है। फैट से घी व अन्य पदार्थों से सूखा दुग्ध (पाउडर) बनाया जाता है। देशी गो दुग्ध में विलक्षण लाभादायी तत्वों के अतिरिक्त स्नेह प्रदार्थ व दिव्य गुणों का प्रभाव रहता है जिसे पुरातन ऋषियों ने साधना व अनुसंधान से जानकर घी बनाने की वैज्ञानिक पद्धति विकसित की थी। शुद्ध घी बनाने के लिये दो चीजे अनिवार्य हैं – एक शुद्ध देशी गाय का दुग्ध व दूसरा घी बनाने की पद्धति।

25000 गोवंश पालने के लिए तिरुपति बालाजी के निकटवर्ती गांवों में स्थानीय गोपालकों द्वारा गोवंश पालने की व्यवस्था देव स्थानम न्यास की देखरेख में हो सकती है, ऐसे गोपालकों से ही शुद्ध घी प्राप्त किया जा सकता है। गोपालकों के दुग्ध की लागत का विश्लेषण करके तथा घी बनाने की प्रक्रिया के खर्च का अध्ययन करके गोपालक के शुद्ध देशी अमृत तुल्य घी का मूल्य निर्धारण करना होगा, जो मेरे अनुभव के अनुसार 1000 रू. प्रति किलो कम–से–कम होगा।

दूसरी व्यवस्था–देव स्थानम न्यास बड़े–बड़े संस्थान चलाता है। एक संस्थान 25000 गोवंश – दुग्ध देने वाली अंगोल व पुंगनूर नस्ल का बनायें एवं उससे घी प्राप्त करें, तभी शुद्ध घी प्राप्त हो सकता है। पिछले दिनों विभिन्न स्रोतों से आंकड़े आये हैं जिनके अनुसार 3 लाख लड्डू भोग प्रसाद हेतु प्रतिदिन बनते हैं। 500 रु. करोड़ की आय संस्थान द्वारा प्रतिवर्ष बनाये गये भोग प्रसाद से प्राप्त होती है। यदि यह शुद्ध आय है (अर्थात भोग प्रसाद बनाने का खर्च घटाकर) तो 500 रु. करोड़ की सहायता राशि से उपरोक्त व्यवस्थाओं का पोशण किया जा सकता है। ***वास्तव में आस्था, श्रद्धा, विश्वास, संस्कृति और परम्पराओं का कोई भैतिक मूल्य नहीं हो सकता।*** इसलिए हमें प्राण न्योछावर करके भी उनका संरक्षण, संवर्धन व पोषण करना चाहिए।

पूजा पाराशर (स्वतंत्र लेखिका)

तिरुपति बालाजी के लड्डू में मिलावट
मानवाधिकार का घोर हनन

ईश्वर द्वारा इस संसार की रचना बहुत ही व्यवस्थित ढंग से की गई है। जीव–प्राणियों का एक–दूसरे पर आश्रित होकर प्रकृति के संतुलन को बनाए रखना प्राकृतिक स्वभाव है, परंतु विडंबना यह है कि शनै–शनै कलयुगी प्रभाव कहें या व्यक्ति का स्वार्थ, जिसने स्वभावतः प्रक्रिया को तोड़कर इसे अपने अनुसार बदलने का प्रयास किया है, जिसका दुष्परिणाम दुःख, पीड़ा, रोग व हिंसा जैसी प्रवृत्तियों का जन्म है। श्रीमद्भगवद्गीता के सत्रहवें अध्याय में भगवान कृष्ण ने तीन प्रकार के भोजन का वर्णन किया है – सात्विक, राजसिक एवं तामसिक।

आयुःसत्त्वबलारोग्यसुखप्रीतिविवर्धनाः
रस्या स्निग्धाः स्थिरा हृद्या आहाराः सात्विकप्रियाः
(आयु, बुद्धि, बल, आरोग्य, सुख और प्रीति को बढ़ाने वाले रसयुक्त, चिकने और स्थिर रहने वाले तथा स्वभाव से ही मन को प्रिय, ऐसे आहार अर्थात् भोजन करने के पदार्थ सात्विक पुरुष को प्रिय होते हैं)।

कट्वम्ललवणात्युष्णतीक्ष्णरुक्षविदाहिनः
आहारा राजसस्येष्टा दुःखशोकामयप्रदाः
(कड़वे, खट्टे, लवणयुक्त, बहुत गर्म, तीखे, रूखे, दाहकारक और दुःख, चिंता तथा रोगों को उत्पन्न करने वाले आहार अर्थात् भोजन करने के पदार्थ राजस पुरुष को प्रिय होते हैं)।

यातयामं गतरसं पूति पर्युषितं च यत्
उच्छिष्टमपि चामेध्यं भोजनं तामसप्रियम्।।
(जो भोजन अधपका, रस रहित, दुर्गंधयुक्त, बासी और उच्छिष्ट है तथा जो अपवित्र भी है, वह भोजन तामस पुरुष को प्रिय होते हैं)।

पुरानी कहावत है – ***"जैसा अन्न वैसा मन"***, व्यक्ति जिस प्रकार का भोजन करता है, वह वैसी ही प्रवृत्ति धारण करता है, या व्यक्ति जिस प्रवृत्ति का होता है, वह उसी प्रकार का भोजन करता है। इन बातों का ही अनुसरण करते हुए व्यक्ति अपने मानवीय स्वभाव और उसे शुद्ध बनाए रखने हेतु शुद्ध आहार का सेवन

करता है। जब बात भगवान के प्रसाद की आती है तो अत्यधिक शुद्धता का ध्यान रखा जाता है, यहाँ तक कि उस प्रसाद को बनाते समय तन–मन–धन तीनों की पवित्रता का भी विशेष ध्यान रखा जाता है। अतः **"प्रसाद" जिसे भगवान का आशीर्वाद कहा गया है**, श्रद्धालु उसमें किसी भी मिलावट को किसी भी परिस्थिति में स्वीकार नहीं कर सकता!

"प्रसाद" जिसका अर्थ है "पवित्र भोजन" जो भक्तों द्वारा ईश्वर को अर्पित किया जाता है और वही ईश्वर का आशीर्वाद स्वरूप भक्तों में वितरित किया जाता है। जब इस प्रसाद को अपवित्र करने का प्रयास किया जाए तो यह व्यक्ति की आस्था, श्रद्धा और उसके विश्वास के साथ आघात है; एक बड़ा अपराध है। यह व्यक्ति को सामने से चाकू मारने से भी कहीं अधिक दर्दनाक होता है, क्योंकि चाकू का घाव तो समय के साथ भर जाता है परंतु ऐसा विश्वासघात व्यक्ति के लिए जीवनभर असहनीय हो जाता है।

आंध्र प्रदेश के तिरुपति जिले के तिरुमला पहाड़ी पर स्थित श्री वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर (बालाजी) भारत का सबसे धनी मंदिर माना जाता है। भक्ति और श्रद्धा का प्रतीक बालाजी मंदिर जहाँ प्रतिदिन 60000 से 70000 हजार श्रद्धालु दर्शनार्थ आते हैं और यही संख्या त्यौहार या विशेष दिन में एक लाख से भी अधिक हो जाती है। मंदिर में प्रसाद स्वरूप मिलने वाले लड्डू को पाने और उसका स्वाद चखने हेतु न मात्र भक्त अपितु उस भक्त के रिश्तेदार और पड़ोसी भी प्रतीक्षारत रहते हैं। वे बालाजी का नाम तब तक रटते रहते हैं जब तक उस लड्डू को चख नहीं लेते। आज इसी श्रद्धा–आस्था को तोड़ने का प्रयास किया जा रहा है।

तिरुपति लड्डू जिसे **'श्रीवारी लड्डू'** भी कहा जाता है। इस संदर्भ में सन् 2009 में भौगोलिक उपदर्शन मिला है, जिसके कारण मात्र तिरुमला तिरुपति देवस्थान ही इसे बना सकता है। ये लड्डू चने, गाय के घी, चीनी, काजू, किशमिश, बादाम आदि से बनाए जाते हैं। विशेष बात यह है कि इन्हें बनाने में प्रतिदिन लगभग 15,000 किलो गाय के घी का प्रयोग होता है।

हाल ही में तिरुपति लड्डू पर उठे विवाद के अनुसार लड्डू में प्रयोग होने वाले गाय के देसी घी में मिलावट पाई गई है। तिरुमला तिरुपति देवस्थान (टीटीडी) व राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (एनडीडीबी) के अनुसार लड्डू के लिए प्रयोग होने वाले घी के नमूने में **"बीफ टैलो", "लार्ड" और "मछली का तेल"** पाया गया है। ईओ की रिपोर्ट के अनुसार एफएसएसएआई (FSSAI) के विनिर्देशों के अनुसार घी के टैंकों से नमूने गुणवत्ता परीक्षण के लिए गोपनीय रूप से राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (एनडीडीबी), लैब, आनंद, गुजरात भेजे गए थे।

टीटीडी की रिपोर्ट में कहा गया है कि एनडीडीबी के परिणाम में सभी नमूनों में वनस्पति और पशु वसा आधारित मिलावटें हैं, जिनमें लॉर्ड भी शामिल है। इस खुलासे के बाद डेयरी द्वारा मिलावटी गाय के घी टैंकों

को वापस कर दिया गया और आगे की आपूर्ति रोक दी गई।

जिस मंदिर में प्रतिदिन लगभग 2 करोड़ से भी अधिक का चढ़ावा आता है; तिरुमला और तिरुपति को मिलाकर प्रतिदिन लगभग 1.92 लाख लोग अन्नप्रसाद प्राप्त करते हैं; प्रतिदिन जहाँ 3.5 लाख लड्डू बनाए जाते हैं; यह बात अचंभित करती है कि वहाँ लड्डू में उपयोग होने वाले घी को कम दाम में खरीदने के लिए उसकी शुद्धता से समझौता किया गया। रिपोर्ट में कहा गया है, "खराब गुणवत्ता नियंत्रण प्रणाली जैसे मिलावट के लिए परीक्षण उपकरणों की कमी और नमूनों को परीक्षण के लिए बाहरी प्रयोगशालाओं में न भेजने के कारण, आपूर्तिकर्ताओं ने लाभ उठाया और बहुत कम, अव्यवहारिक दरों का हवाला देना शुरू कर दिया, जो 320 रुपये प्रति किलोग्राम और 411 रुपये के बीच है। यह सर्वविदित है कि कोई भी इन दरों पर शुद्ध घी की आपूर्ति नहीं कर सकता है।"

उपरोक्त कथनानुसार किए गए घी निर्यातक के परिवर्तन से दो बातें सामने आती हैं कि या तो इतने धनी मंदिर की आर्थिक व्यवस्था खराब है या भक्तों को आहत पहुँचाने के लिए जानबूझकर किया गया षड्यंत्र। इस प्रकार की घटना मानवाधिकार के हनन को दर्शाती है, जिस पर कड़ी से कड़ी कार्रवाई होनी चाहिए। ऐसी व्यवस्था लागू होनी चाहिए व नियम बनाए जाने चाहिए कि भविष्य में इस प्रकार की घटना पुनः दोहराई न जा सके; भक्ति, श्रद्धा, आस्था और विश्वास को पुनः ठेस पहुँचाया न जा सके एवं मानवीय अधिकारों और उनके मूल्यों की रक्षा की जा सके। यही मानवीय धर्म है, यही सनातन धर्म है।

क्या है बीफ टैलो और लार्ड?

"बीफ टैलो गायों के फैटी टिश्यू से निकाले गए फैट होते हैं। टैलो को मांस से अलग की गई चर्बी को गर्म करके और पिघलाकर बनाया जाता है, जो तरल पदार्थ रूप में बदल जाता है और कमरे के तापमान पर ठंडा होने पर एक लचीला, मक्खन जैसा ठोस पदार्थ बन जाता है।" "लार्ड एक मुलायम, क्रीम जैसा सफेद ठोस वसा होता है, जिसकी बनावट मक्खन जैसी होती है। इसे घरेलू सूअरों के फैटी टिश्यू को पिघलाकर या रेंडरिंग करके बनाया जाता है। लार्ड का इस्तेमाल खाना पकाने के लिए किया जाता है, जैसे तलने, भूनने और पकाने में।"

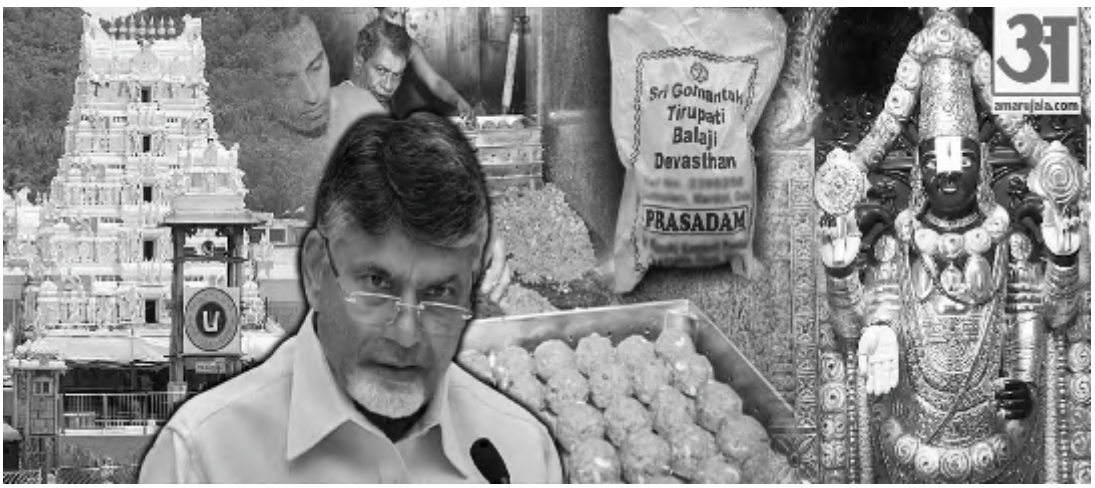

गोविज्ञान परीक्षा का
ऑनलाइन/ऑफ लाइन आयोजन

सम्पूर्ण देश के वर्तमान शिक्षा पाठ्यक्रमों में कहीं पर भी भारतीय गोदर्शन या भारतीय गोविज्ञान के बारे में विद्यार्थियों के ज्ञानवर्धन के लिए कुछ भी नहीं है, जबकि कुछ समय पूर्व अनेक राज्यों में गोमाता का विषय समाहित था। एक षड्यंत्र के तहत योजनाबद्ध तरीके से इस विषय को पाठ्यक्रमों में से निकाल दिया गया। इसलिए भारतीय गोवंश रक्षण–संवर्द्धन परिषद, नई दिल्ली द्वारा वर्ष 2011 से सम्पूर्ण देश में गोविज्ञान परीक्षा के माध्यम से देशी गोवंश के आर्थिक, वैज्ञानिक, धार्मिक, सामाजिक सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं पर्यावरणीय महत्व की श्रेष्ठ और नई–नई जानकारी देने का प्रयास किया जा रहा है। अब तक संगठनात्मक दृष्टि से देश के 47 प्रांतों में से 39 प्रांतों में गोविज्ञान परीक्षा सफलतापूर्वक आयोजित कराई जा रही है। साथ ही देश की प्रमुख हिन्दी, अंग्रेजी, पंजाबी, असमिया, बंगाली, उड़िया, तेलगू, मराठी, गुजराती भाषाओं में गोविज्ञान परीक्षा के माध्यम से लाखों विद्यार्थियों को भारतीय गौ–दर्शन के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी हो रही है। आपको यह जानकर अत्यन्त हर्ष होगा कि इस वर्ष 2 जुलाई, 2024 को गोविज्ञान परीक्षा की चिंतन बैठक विहिप केन्द्रीय कार्यालय, नई दिल्ली में सम्पन्न हुई, जिसमें 10 क्षेत्रों के 17 अपेक्षित कार्यकर्ताओं में से 16 कार्यकर्ता उपस्थित रहे। बैठक में निम्न बिन्दुओं पर विचार–विमर्श किया गया, जो निम्नवत हैं –

वर्ष 2024 में दिनांक 19 से 26 अक्टूबर 2024 तक निःशुल्क ऑफ–लाइन एवं 26 अक्टूबर, 2024 को ऑन–लाइन गोविज्ञान परीक्षा आयोजित की जायेगी, जिसकी संक्षिप्त जानकारी निम्नवत है –

1. रजिस्ट्रेशन शुल्क ऑन–लाइन 10रु. एवं ऑफ–लाइन 20रु. होगा। इसके लिए मोबाइल के प्ले स्टोर से Govigyanexam ऐप डाउनलोड करके अपना पंजीकरण करने के बाद आप **भारतीय गौदर्शन परीक्षा पुस्तक** को मोबाइल में देख सकते और पढ़ सकते हैं, साथ ही इसकी पीडीएफ फाइल निःशुल्क डाउनलोड भी कर सकते हैं।

2. **भारतीय गौदर्शन पुस्तक** – यह सम्पूर्ण परीक्षा भारतीय गौदर्शन पुस्तिका पर आधारित है, जो आपको Govigyanexam ऐप में निःशुल्क उपलब्ध है। इस ऐप में भारतीय गौदर्शन पुस्तक अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध है, जिसे आप देख सकते एवं पढ़ सकते हैं। यह परीक्षा हिन्दी भाषा और अन्य सात भाषाओं में आयोजित की जाती है। यह पुस्तक बहुत ही सरल, आकर्षक, रोचक व ज्ञानवर्धक है।

इस पुस्तक को पढ़ना प्रारंभ करने के बाद जब तक पूरी नहीं पढ़ लेते तब तक मन शान्त नहीं होता है। इस पुस्तक को पढ़ने के बाद आपको भारतीय गौविज्ञान के बारे में अनेक प्रकार की जानकारी सहज ही हो जाएगी।

3. परीक्षा – परीक्षा तिथि के दिन प्रातः 7 बजे से सायं 7 बजे तक Govigyanexam ऐप में 'परीक्षा प्रारंभ करें' वाला बॉक्स खुला रहेगा। उस दिन मोबाइल से इस ऑनलाइन गौविज्ञान परीक्षा को हर कोई (महिला, पुरुष, विद्यार्थी, छोटे – बड़े सभी) बहुत ही सरलता से दे सकेंगे। इस परीक्षा को आप अपने मोबाइल से कहीं से भी दे सकते हैं, परन्तु एक मोबाइल नम्बर से एक बार ही परीक्षा दे सकेंगे।

4. वर्ग– परीक्षा के लिए चार वर्ग निर्धारित किये गये हैं, जिसमें कक्षा 8 तक को ''कनिष्ठ वर्ग'' में, कक्षा 9 से 12 तक को ''माध्यमिक वर्ग'' में, कक्षा 12वीं से ऊपर वाले कालेज विद्यार्थियों को ''उच्च वर्ग'' में और अन्य सभी सामान्य नागरिकों (महिला, पुरुष, बड़े–बुजुर्ग आदि) को ''वरिष्ठ वर्ग (सिटीजन ग्रुप)'' में रखा गया है। आप अपना पंजीकरण भी उसी अनुरूप करें/करायें।

परीक्षा तिथि – दिनांक 19 से 26 अक्टूबर 2024 तक ऑफ–लाइन एवं ऑन लाइन 26 अक्टूबर, 2024। "शीघ्र ही Govigyanexam ऐप डाउनलोड करके अपना और सभी परिचितों का पंजीकरण पूरा कर लें। ऐप के लिंक सभी भाट्सएप नम्बरों पर शेयर करें।

5. सरल प्रश्न– इस गौविज्ञान परीक्षा में सभी प्रश्न बहुत ही सरल, रोचक और ज्ञानवर्धक होंगे। सभी सरलता से परीक्षा दे सकते हैं। परीक्षा में 50 प्रश्न ABCD टाइप के वैकल्पिक होंगे, जिनमें से किसी एक को चुनना है। सभी प्रश्न दो– दो अंक के होंगे। पूर्णांक 100 अंकों का होगा। परीक्षा में निगेटिव मार्किंग नहीं है। परीक्षा का समय 30 मिनट का रहेगा। परीक्षा पूरी होने के बाद आप अपने प्राप्तांक हाथों–हाथ देख सकेंगे। परीक्षा के बाद उसी समय बहुत ही सुंदर और आकर्षक प्रमाणपत्र (सर्टिफिकेट) भी आप डाउनलोड कर सकेंगे।

6. डेमो – Govigyanexam ऐप में परीक्षा देने का डेमो (सेम्पल) भी दिया हुआ है। परीक्षा के लिए ऐप में दिये गये डेमो और सूचनाओं को ध्यान से पढ़कर परीक्षा देनी चाहिए। डाउनलोड किया हुआ डेमो सर्टिफिकेट मान्य नहीं है।

7. यह गौविज्ञान परीक्षा केवल भारतीय गोवंश के प्रति ज्ञानवर्धन के लिए आयोजित की जाती है। इसके पीछे किसी भी प्रकार के आर्थिक, राजनीतिक लाभ की मंशा नहीं है।

8. परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले परीक्षार्थियों को प्रांत स्तर पर सम्मानित किया जाएगा।

9. पुरस्कार प्राप्त करने वाले चारों वर्ग के बन्धु/भगिनी के लिए भी प्रमाण पत्र केन्द्र भेजेगा।

10. प्रान्तीय ट्रस्ट के अध्यक्ष, मंत्री, गोविज्ञान परीक्षा प्रमुख एवं गोरक्षा प्रमुख प्रेस वार्ता का आयोजन कर परीक्षा संबंधी जानकारी की सूचना प्रसारित कर सकते हैं।

11. गौविज्ञान परीक्षा सम्बंधी अधिक जानकारी के लिए – श्री शैलेन्द्र सिंह (राष्ट्रीय गोविज्ञान परीक्षा प्रमुख) मो. 9411851552 एवं श्री रामानन्द यादव (केन्द्रीय कार्यालय) मो. 9958710672 से सम्पर्क करें।

गोरक्षा विभाग, काशी प्रांत का प्रशिक्षण वर्ग संपन्न

गाय कोई साधारण पशु नहीं बल्कि मां है।'' गोमाता की रक्षा हेतु स्वयं भगवान को पृथ्वी पर मानव अवतार लेकर आना पड़ा। आज वही गोमाता बेसहारा बनकर दर–दर की ठोकरें खा रही हैं। उक्त उद्गार भारतीय गोवंश रक्षण संवद्धन परिषद (गोरक्षा विभाग), विहिप के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गुरु प्रसाद सिंह ने विहिप, गोरक्षा विभाग, काशी प्रांत द्वारा पूज्य शंकराचार्य आश्रम, अलोपी बाग में गतमाह आयोजित दो दिवसीय प्रशिक्षण वर्ग के समापन अवसर पर व्यक्त किये। उन्होंने कहाकि भारत में गाय चिंता का विषय है जबकि विदेशों में गोमाता चिंतन का विषय बन चुकी है। गो विज्ञान परीक्षा के राष्ट्रीय प्रमुख शैलेंद्र सिंह ने अपने उद्बोधन में गोमाता की उपयोगिता पर विस्तृत चर्चा की। विहिप, गोरक्षा विभाग के प्रांत मंत्री लाल मणि तिवारी जी ने रोजगार युक्त नौजवान, कर्ज मुक्त किसान, स्वस्थ भारत व समर्थ भारत की परिकल्पना के साथ गोरक्षा अभियान को तेज करने का आह्वान किया। क्षेत्र गोशाला संपर्क प्रमुख जितेंद्र जी ने गौशालाओं के निर्माण, जैविक कृषि, किसान सम्मेलन आदि विषय पर जोर दिया। प्रांत अध्यक्ष श्री भोला नाथ ने अध्यक्षीय भाषण देते हुए प्रशिक्षण वर्ग में आए हुए सभी सम्मानित अतिथियों को धन्यवाद दिया तथा प्रखंड व जिला स्तर के पदाधिकारियों की घोषणा प्रांत मंत्री लाल मणि तिवारी जी द्वारा की गई। प्रशिक्षण वर्ग में काशी प्रांत के 22 जनपदों के लगभग 250 जनप्रतिनिधियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षण वर्ग में गोवंश की रक्षा–संवर्धन तथा जैविक कृषि हेतु पदाधिकारियों को प्रशिक्षित किया गया। इस अवसर पर सर्वश्री नवीन जी, वीरेंद्र जायसवाल, सुशील चतुर्वेदी, विष्णु कांत, अशोक मिश्रा, पवन मिश्रा, विनय, नरेंद्र, सूर्य प्रकाश, विष्णु दुबे, महेंद्र शुक्ला आदि उपस्थित थे।

प्रस्तुति – लाल मणि तिवारी

हरिशंकर दीक्षित 'पथिक'

भावी सन्तति के सुखद भविष्य के लिये
गोवंश बचाना अतिशय आवश्यक

लगभग दो सौ वर्ष पूर्व प्रारम्भ मशीनी औद्योगिक क्रान्ति ने सम्पूर्ण विश्व में उत्पादन की गति को गुणात्मक रूप से बढ़ाकर मनुष्य को अनावश्यक उपभोगी ही नहीं, कठोर परिश्रम से विमुख कर विलासप्रिय बनाते हुए प्रकृति के दोहक के स्थान पर शोषक बना दिया है। आज का मनुष्य महामूर्ख से भी आगे बढ़कर अपनी भावी पीढ़ियों के लिए धन संग्रह हेतु प्रकृति का शोषण ही नहीं कर रहा अपितु उसे नोच–खसोटकर उसका अंग–भंग तक करने लगा है। पाँचों महाभूत प्रकृति की शक्ति पर्यावरण के ही अंग हैं। आज का मनुष्य इनमें रासायनिक प्रदूषणरूपी विष भरता जा रहा है, यह जानते हुए भी कि यह विष उसकी अगली पीढ़ियों को भी पीना पड़ेगा।

प्रकृति की शक्ति पर्यावरण के पांच अंगों में **आकाश** प्रमुख है जिसमें अन्य चारों भूत अवस्थित हैं। हमारी धरती ही हमारे सौर मण्डल का ऐसा अद्भुत ग्रह है जहाँ पर ईश्वर ने जैविक सृष्टि की है। यह जैविक सृष्टि चौरासी लाख योनियों में हुई है। आज का विज्ञान लगभग अस्सी लाख योनियों की पहचान कर चुका है। इनमें से दो योनियाँ प्रमुख हैं जो ईश्वर को अतिशय प्रिय हैं। वे मनुष्य और गोवंश हैं। इन दोनों योनियों में गोवंश को प्रकृति की शक्ति पर्यावरण को स्वस्थ बनाये रखने के निमित्त और मनुष्य को गोवंश का पालन–पोषण एवं रक्षा करते हुए उसकी शक्ति सम्पदा का समुचित उपयोग कर अपना जीवनयापन करने और पर्यावरण को गो–घृतादि की हवि से पुष्ट करते रहने के लिए ही ईश्वर ने सिरजा है, जिससे कल्पान्त तक सृष्टि की निरन्तरता अक्षुण्ण रहे।

हमारे पुण्यात्मा पूर्वजों ने इस

सत्य को अपनी सृष्टि विषयक जिज्ञासा के समाधान के रूप में कठोर तप करते हुए जाना और संसार को बाँटा भी। तब से हमारे पूर्वज गोपालन–पोषण और रक्षा करते हुए इसकी शक्ति– सम्पदा का उपयोग कृषि कार्यों तथा अन्यान्य धन्धों में करते हुए, यज्ञ–हवनादि द्वारा पर्यावरण पुष्ट करते हुए अपना जीवनयापन करते आये हैं। इस पावन लोक मंगलकारी कार्य में व्यवधान मशीनी उद्योगों के कारण पड़ा है जो बढ़ते–बढ़ते आज धरती की शिव–सुन्दर सृष्टि के विनाश का कारण बनता जा रहा है। हानिकारक विषाक्त रसायनों से आज पर्यावरण के पांचों अंग प्रदूषित होते जा रहे हैं। इससे वैश्विक ताप इतना अधिक बढ़ता जा रहा है जो खण्डप्रलय का कारण निकट भविष्य में बनने वाला है। वायु और आकाश में प्रदूषण बढ़ते जाने के कारण ही प्रकृति अपना कार्य सुचारू रूप से नहीं कर पा रही है। वर्षा चक्र का अनियमित –अनियन्त्रित होना और विशाल हिमशैल ही नहीं, हिम सागरों तक का निरन्तर अस्वाभाविक रूप से पिघलना इस बात का स्पष्ट प्रमाण है।

पश्चिमी क्षितिज की मशीनी औद्योगिक दुष्क्रान्ति ने हमारी पुण्य भूमि पर पाप के ऐसे घातक बीज बोये कि आज हमारा सर्वदेवमय लोकमंगलकारी गोवंश, हमारे द्वारा ही उपेक्षित–तिरस्कृत होकर विलुप्ति की कगार तक पहुँचाया जा रहा है। **इस दुष्क्रान्ति ने अर्थशास्त्र की परिभाषा बदलकर लोकहितकारी त्याग–भाव को भोगवादी दुष्प्रवृत्ति में बदल दिया है।** भोगवादी दुष्प्रवृत्ति के दास बनकर आज हम बाजार की आकर्षक मायावी वैलासिक डोर से बँधकर बन्दर की भाँति नाच रहे हैं। अनावश्यक उपभोगवादी प्रवृत्तियाँ हमें परिश्रम विमुख कर कुमार्गगामी बनाती जा रही हैं।

इस मायावी बाजार के जाल में फंसकर हमने सबसे भारी पाप अपने मातृ–पितृवत गोवंश का तिरस्कार करके किया है। इस पाप के फल हम भोग भी रहे हैं किन्तु हमें अनुभव नहीं हो रहा है। हमारे घरों में गोवंश के न होने से नाना प्रकार के रोगों के विषाणुओं को आश्रय मिलता जा रहा है।

जब तक गोवंश हमारे परिवार के अंग के रूप में रहा था तब तक उसकी श्वांस प्रच्छ्वास से ये विषाणु नष्ट हो जाते थे। इससे हम सपरिवार स्वस्थ रहते थे। हमारी असावधानी के कारण मात्र वात–पित्त और कफ जनित या दूषित खानपान के कारण होने वाले रोग ही होते थे। हमने जबसे गोवंश का तिरस्कार कृषि कार्यों तक से कर दिया है तबसे गाँवों में भी शायद ही कोई परिवार ऐसा हो जहाँ नित्य ही कोई–न–कोई बीमार न होता हो।

कृषि क्षेत्र से गोवंश की उपेक्षा होना गोवंश की दुर्दशा का मूल कारण है। जब कृषि कार्यों में बैलों की आवश्यकता नहीं रही तब अपेक्षाकृत कम दुग्धदायी देशज गायों का तिरस्कार प्रारम्भ हो गया। इससे गायें मारी–मारी फिरने लगीं और बछड़े कसाइयों का सहज आखेट बनकर उनका घर धन से भरने लगे। ग्रामीण क्षेत्रों तक में इसी धन से मस्जिदें बनने लगीं और फर्जी मजारों की संख्या भी बढ़ने लगी। यही नहीं जहाँ मजार वहाँ मस्जिद भी रातों रात खड़ी होने लगीं। कोई माने या न माने इस्लामी कट्टरपंथियों को प्राप्त होने वाले धन में गोवंश की तस्करी कर, उसके मांस से प्राप्त धन का भारी योगदान है। पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, बिहार से बंगाल तक होने वाली गोवंश की तस्करी जो यदा–कदा निष्ठावान कर्मचारियों या गोरक्षकों द्वारा पकड़ी जाती है, इस बात का प्रमाण हैं।

गोवंश की सुरक्षा करते हुए उसकी शक्ति–सम्पदा का समुचित –सदुपयोग करते हुए उसका पालन–पोषण करना प्रत्येक हिन्दू का कर्तव्य (धर्म) है। ध्यान रहे गोवंश का आश्रय स्थल हमारा घर है, जहाँ वह हमारे माता–पिता की भाँति संतुष्ट–सुखी रहता है। हमें फिर से उसे उसके स्थान पर प्रतिष्ठित करना ही होगा, अन्यथा भविष्य में हमारी भी वही दशा होगी जो आज हमारे सर्वदेवमय गोवंश की है। भला प्रकृति अपनी शक्ति पर्यावरण के पोषक गोवंश की दुर्दशा कब तक सहन करेगी। आचार्य चाणक्य का उपदेश ***''प्रकृति कोपः सर्वकोपोभ्याम् गरीयान''***, हमें भूलना नहीं चाहिये।

गोरक्षा विभाग (विहिप)की
अखिल भारतीय बैठक सम्पन्न

''भारतीय गोवंश रक्षण–संवर्द्धन परिषद गोरक्षा विभाग (विहिप)'' की तीन दिवसीय अखिल भारतीय बैठक 27 से 29 सितम्बर, 2024 तक गुरुओं की पवित्र–पावन भूमि – **अमृतसर (पंजाब) में स्थित माधव विद्या निकेतन में अत्यन्त उत्साह**–आनन्द के साथ सम्पन्न हुई। बैठक गोपूजन, गोस्तवन, गो–आरती, दीप प्रज्वलन के साथ प्रारम्भ हुई। बैठक में **भारतीय गोवंश रक्षण–संवर्द्धन परिषद'** ट्रस्ट के न्यासी, संरक्षक एवं क्षेत्र टोली के पदाधिकारी व देश के सभी प्रान्तों से ट्रस्ट के प्रान्त अध्यक्ष, प्रान्त मंत्री (ट्रस्ट मंत्री), प्रान्त कोषाध्यक्ष एवं प्रान्त गोरक्षा प्रमुख, सह प्रान्त गोरक्षा प्रमुख उपस्थित रहे। 38 प्रान्तों का प्रतिनिधित्व रहा जिसमें से 131 कार्यकर्ता उपस्थित रहे। **पूज्य नामधारी संत समाज के प्रमुख** सद्गुरू उदयसिंह जी महाराज के आदेश से सूबा अमरीक सिंह जी और सूबा शाम सिंह जी के साथ 40 संतों के एक प्रतिनिधि मंण्डल ने उपस्थित होकर उद्घाटन सत्र की शोभा बढ़ाई।

उद्घाटन में मा. दिनेश उपाध्याय जी (अखिल भारतीय गोरक्षा प्रमुख) ने प्रस्तावना रखी। उन्होंने तीन दिन के सत्रों के विषय की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि बैठक उद्घाटन से समापन तक कुल 11 सत्र एवं क्षेत्रशः बैठकें व एक **श्रेणीशः बैठक** रहेगी। भारतीय गोवंश रक्षण–संवर्द्धन परिषद के अध्यक्ष मा. गुरु प्रसाद सिंह जी ने अध्यक्षीय उद्बोधन दिया। तत्पश्चात विश्व हिन्दू परिषद के सह संगठन महामंत्री मा. विनायक राव देशपाण्डेय जी का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

अगले सत्र में डॉ. माधवी गोस्वामी जी ने पंचगव्य–आयुर्वेद चिकित्सा के अंतर्गत देशी गाय के गोमूत्र के औषधीय गुणों के संदर्भ में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा मानव शरीर से सभी विषैले तत्वों को गोमूत्र नष्ट कर बाहर निकालने में सक्षम है। अखिल भारतीय गोभक्त महिला प्रमुख वैद्य नन्दिनी भोजराज जी ने महिलाओं के प्रमुख कार्यों के संबंध में विस्तृत प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि औषधियों का निर्माण समुचित पंद्धति और नियम पूर्वक किया जाना चाहिए, तभी उनका विशेष लाभ प्राप्त होता है। स्मरण रहे, लाइसेन्स लेकर ही औषधियों का निर्माण करे। उनका कहना है कि गोमूत्र अर्क प्रेशर कुकर में किसी भी

स्थिति में नहीं बनाना चाहिए क्योंकि उसमें अर्क जहरीला हो जाता है। डॉ. कृष्णपाल सिंह जी (केन्द्रीय उपाध्यक्ष) ने श्री तिरुपति बाला जी के मंदिर के प्रसाद में चर्बी मिलाये जाने से संबंधित एक प्रस्ताव का वाचन किया। इस प्रस्ताव का मा. वीरन्द्र जी धाकड़ (केन्द्रीय संरक्षक) एवं श्री सतीश चौधरी जी (सह क्षेत्र गोरक्षा प्रमुख) ने अनुमोदन किया। सभी ने ऊँ की ध्वनि से इसे स्वीकृति दी।

इस अवसर पर उपस्थित विहिप के सह संगठन महामंत्री मा. विनायक राव देशपाण्डेय जी के एक प्रश्न के उत्तर में 8 पदाधिकारियों ने बताया कि हम पूर्णरुप से गोवंश आधारित खेती कर रहे हैं। अन्य 11 कार्यकर्ताओं ने कहा कि वे आंशिक रूप से गोवंश आधारित खेती कर रहे हैं। मा. विनायक जी ने कहा कि जिस प्रकार धर्मप्रसार विभाग के द्वारा हर जिले में कार्यकर्ता नियुक्त किये गये हैं उसी प्रकार गोरक्षा विभाग को भी हर जिले में कार्यकर्ता नियुक्त करना चाहिए। उन्होंने कहा कि संघ गोसेवा गतिविधि, संघ ग्राम विकास और विहिप गोरक्षा विभाग का समन्वय होना आवश्यक है। वर्ष में एक या दो सामूहिक बैठकें की जानी चाहिए। अगले सत्र में भारतीय गोवंश रक्षण – संवर्द्धन परिषद के महामंत्री मा. राजेन्द्र प्रसाद सिंहल जी ने प्रतिवेदन रखा और गत वर्ष आयोजित बैठक की कार्यवाही संक्षिप्त में बतलाई। साथ ही आगामी वर्ष हेतु परिषद का बजट प्रस्तुत किया। इसके अलावा उन्होंने **गोसम्पदा** पत्रिका विस्तार के लिए सभी कार्यकर्ताओं से विशेष आग्रह किया। बाद में उन्होंने गोसम्पदा पत्रिका के आगामी **गोपाष्टमी विशेषांक** हेतु विज्ञापन भेजने के संदर्भ में सभी से हार्दिक निवेदन किया कि वे दीपावली तक विज्ञापन अवश्य भेजें। गोवंश आधारित कृषि करने के लिए श्री भगत सिंह जी ने सभी से अधिक–से–अधिक प्रयास करने का आग्रह किया। उन्होंने ने जानकारी दी कि 7 वर्ष में गोकृपा अमृतम बांटने के लिए 22 राज्यों में 600 से अधिक शिविर लगाये गये। अगले सत्र में मा. विनायक जी ने पंच परिवर्तन के संदर्भ में जानकारी देते हुए कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा पांच विषयों पर चिंतन–मनन किया जा रहा है, जिनमें **1. सामाजिक समरसता 2. कुटुम्ब प्रबोधन 3. पर्यावरण 4. स्व का जागरण 5. नागरिक अनुशासन** विषय शामिल हैं। अतः हमें भी इन विषयों पर चिंतन–मनन करना चाहिए।

आगामी सत्र में गोविज्ञान अनुसंधान केन्द्र के सचिव श्री सनत कुमार गुप्ता जी ने आगामी माह में आयोजित किये जाने वाले प्रशिक्षण वर्गो के संबंध में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि अक्टूबर, में 19 से 23 तक, नवम्बर में 24 से 28 तक और दिसम्बर में 24 से 28 तक कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण दिया जायेगा। कार्यक्रम के दौरान परिषद के केन्द्रीय मंत्री श्री लाल बहादुर सिंह जी ने शोक प्रस्ताव रखा। साथ ही दिवंगत आत्माओं के प्रति दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। बाद में मा. दिनेश उपाध्याय जी ने कहा कि दायित्व बोध के अन्तर्गत 24 घंटे का प्रशिक्षण वर्ग लगाया जाये, तीन दिन का नहीं। उन्होंने कहा कि विभाग में कोई भी नया दायित्व नहीं देना है।

अगले सत्र में विश्व हिन्दू परिषद के सयुंक्त महामंत्री मा. स्थानुमलयन जी ने कहा कि मंदिर के अर्चक पुरोहित, संत सम्पर्क, मंदिर केन्द्रीत गोपालन, यात्री गोदर्शन, शुद्ध हवन सामग्री कैसे मिले आदि विषयों पर चिन्तन–मनन करना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि प्रान्त कार्यालय में पंचगव्य उत्पाद विक्री केन्द्र बनाना आवश्यक है इसके अलावा गोमाता की दर्शनीय सामग्री सभी लोग प्रवास में अपने साथ अवश्य रखें। डा. नरेश शर्मा ने गोवंश का वैज्ञानिक पक्ष रखा। श्री सोहन विश्वकर्मा और राजेन्द्र पुरोहित जी ने गोवंश उत्पाद और उनके विक्रय केन्द्रों के संबंध में जानकारी दी। विभिन्न सत्रों में क्षेत्रशः प्रतिनिधियों एवं केन्द्रीय अधिकारियों में अगल–अलग सत्रों में अध्यक्षता की। श्री हरेन्द्र अग्रवाल जी (केन्द्रीय मंत्री) ने केन्द्र के दोनो ट्रस्टों के सभी न्यासियों को अंगवस्त्रम ओढ़ाकर और गोमाता की मूर्ति भेंट कर सम्मानित किया।

अगले सत्र में मा. राजेन्द्र प्रसाद सिंहल जी द्वारा 13 क्षेत्रों के पालक अधिकारियों की घोषणा की गयी। जो निम्न है :–

क्र.	क्षेत्र पालक	नाम	दायित्व
01	इन्द्रप्रस्थ क्षेत्र	श्री हरेन्द्र अग्रवाल जी,	केन्द्रीय मंत्री
02	मेरठ क्षेत्र	श्री राजेन्द्र सिंहल जी	केन्द्रीय महामंत्री
03	लखनऊ क्षेत्र	श्री शैलेन्द्र कुमार सिंह जी	गोविज्ञान परीक्षा प्रमुख
04	पटना क्षेत्र	श्री त्रिलोकीनाथ बागी जी	केन्द्रीय सदस्य
05	कोलकता क्षेत्र	मा. गुरु प्रसाद सिंह जी	केन्द्रीय अध्यक्ष
06	गुवाहाटी क्षेत्र	श्री सुनील मानसिंहका जी	केन्द्रीय मंत्री

07	भोपाल क्षेत्र	श्री लाल बहादुर सिंह जी	केन्द्रीय मंत्री
08	जयपुर क्षेत्र	मा. हुकुमचन्द सावला जी	केन्द्रीय संरक्षक
09	मुम्बई क्षेत्र	मा. शंकर गायकर जी	केन्द्रीय मंत्री
10	कर्णावती क्षेत्र	श्री उत्तम राव कुदले जी	संयुक्त क्षेत्रीय प्रमुख
11	भाग्यनगर क्षेत्र	एड. जसराजश्री श्रीमाल जी	केन्द्रीय उपाध्यक्ष
12	बंगलोर क्षेत्र	श्री टी. यादगिरी राव जी	संयुक्त क्षेत्रीय प्रमुख
13	चेन्नई क्षेत्र	श्री जी. स्थानुमलयन जी	गोरक्षा विभाग, पालक

मा. राजेन्द्र प्रसाद सिंहल जी द्वारा निम्न नवीन दायित्वों की घोषणा भी की गई।

क्र.	नाम	केन्द्र	नवीन दायित्व
1	श्री सुरेन्द्र लाम्बा जी	दिल्ली	केन्द्रीय मंत्री
2	श्रीमती स्वाति सिंह जी	भोपाल	भोपाल क्षेत्र गोभक्त महिला प्रमुख
3	स्वामी राम दयाल जी	भोपाल	भोपाल क्षेत्र गौशाला सम्पर्क प्रमुख
4	डॉ. सुरेन्द्र सिंह जी	भोपाल	भोपाल क्षेत्र गोविज्ञान परीक्षा प्रमुख
5	श्री वैभव गुप्ता जी	लखनऊ	लखनऊ क्षेत्र गोविज्ञान परीक्षा प्रमुख
6	श्री शिव प्रसाद कौरे जी	परमणी	मुम्बई क्षेत्र प्रशिक्षण प्रमुख
7	श्री समरघोष जी	करीमगंज	गुवाहाटी क्षेत्र गोरक्षा प्रमुख

भारतीय गोवंश रक्षण संवर्द्धन परिषद के नवीन न्यासियों की घोषणा भी की गयी :–

1	केन्द्रीय ट्रस्टी	श्री बजरंग लाल जी बागड़ा	दिल्ली
2	केन्द्रीय ट्रस्टी	श्री श्यामसुन्दर माहेश्वरी जी	दिल्ली
3	केन्द्रीय ट्रस्टी	श्री पद्मेश गुप्ता जी	नागपुर
4	केन्द्रीय ट्रस्टी	श्री नरेश शर्मा जी	नोएडा
5	केन्द्रीय ट्रस्टी	श्री जी. स्थानुमलयन जी	बंगलौर
6	केन्द्रीय ट्रस्टी	श्री महेन्द्र राजपूत जी	गुवाहाटी

गोवंश हत्या एवं मांस निर्यात निरोध परिषद के नवीन न्यासियों की घोषणा भी की गयीः–

1	केन्द्रीय ट्रस्टी	श्री बजरंग लाल जी बागड़ा	दिल्ली
2	केन्द्रीय ट्रस्टी	श्री मुकेश अग्रवाल जी	इन्दौर

पंजाब प्रान्त अध्यक्ष श्री कन्हैया लाल जी ने व्यवस्था में सहयोगी कार्यकर्ताओं का परिचय कराया और मंचासीन पदाधिकारीयों द्वारा उनका सम्मान किया गया। समापन सत्र में गोरक्षा विभाग के संरक्षक मा. हुकुमचन्द जी सावला ने गोरक्षा–गोसेवा के संदर्भ में प्रेरणादायी मार्गदर्शन दिया। उन्होंने कहा कि भारत की आत्मा गाय है। हमारा प्रिय गोवंश **रोगी, योगी, निरोगी** के लिए अत्यधिक आवश्यक है। एक महत्वपूर्ण जानकारी देते हुए बताया कि प्रधानमंत्री मा. नरेन्द्र मोदी जी ने अपने मुख्यमंत्री–कार्यकाल के दौरान गुजरात में 200 गोवंश की ऑखों का आपरेशन करवाया था, जिससे उन्हें सम्पूर्ण देश की सेवा करने और भारत को परम–वैभवशाली बनाने की दृष्टि प्राप्त हुई। उन्होंने पक्षियों के एक दृष्टांत के माध्यम से कहा कि संगठन में ही शक्ति होती है।

अन्त में भारतीय गोवंश रक्षण–संवर्द्धन परिषद के अध्यक्ष मा. गुरु प्रसाद सिंह जी ने गाय के वैज्ञानिक पक्ष को सभी के समक्ष रखा। उन्होंने कहा कि गाय के गोबर, गोमूत्र और दूध के असाधारण गुणों को विज्ञान के आधार पर समझना आवश्यक है। आज हमारा शरीर जहरीला हो रहा है, जिसको स्वस्थ बनाये रखने में तीनों तत्वों की अहम भूमिका है। वास्तव में कोई भी बीमार राष्ट्र सशक्त नहीं हो सकता, इसलिए हमें गोवंश आधारित जीवनशैली अपनाना आवश्यक है। केन्द्रीय मंत्री श्री हरेन्द्र कुमार अग्रवाल जी ने आये हुए सभी कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों का अभिनन्दन किया एवं धन्यवाद ज्ञापित किया और पंजाब प्रान्त के गौरवमय इतिहास और **अमृतसर सिफती का घर** की विशेषताएं बतलाईं। तत्पश्चात आभार प्रदर्शन और पूर्णता मंत्र के साथ बैठक विधिवत सम्पन्न हुई।

प्रस्ताव

बैठक के दौरान ही तिरुपति बालाजी मंदिर के प्रसाद में मिलावट के मामले में एक प्रस्ताव पारित किया गया, जो यथावत प्रस्तुत है – ***सम्पादक***

भारतीय गोवंश रक्षण– संवर्द्धन परिषद की 27, 28, 29 सितम्बर, 2024 तक आयोजित तीन दिवसीय अखिल भारतीय बैठक माधव विद्या निकेतन, अमृतसर, पंजाब में यह प्रस्ताव पारित किया जाता है कि श्री तिरुपति बालाजी मंदिर में गत दिनों भोग प्रसाद की जांच के दौरान उसमें मांसाहारी तत्व चर्बी आदि पाये गये। उसी भोग प्रसाद से भगवान का भोग लगता रहा है। जनमानस प्रसाद ग्रहण करता रहा है। जिससे करोड़ो भगवत भक्तजनों की आस्था, विश्वास, श्रद्धाभक्ति आहत हुई है। गोरक्षा विभाग इसकी घोर निंदा करता है एवं मंदिर प्रशासन, राज्य सरकार, केन्द्र सरकार से निम्न लिखित मांग करता है :–

1. मंदिरों को सरकारी नियंत्रण से मुक्त कर उनका सामाजीकरण किया जाय।
2. जिस मंदिर में जितना भोग प्रसाद लगता है वह शुद्ध देशी गाय के दुग्ध, घी से बने पदार्थों का ही बनाया जाय। उसकी व्यवस्था मंदिर प्रशासन दुधारू देशी गाय पालकर स्वयं करे या अपनी देखरेख में स्थानीय लोगों द्वारा निकटवर्ती गांवों में कराये एवं देशी घी का उत्पादन शास्त्रोक्त विधि से कराये। जिससे ग्रामीण रोजगार से गोपालक समर्थ होगा और ग्रामीण रोजगार निर्माण होगा व गोपालन का विस्तार होगा, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था सुदृढ़ होगी।
3. श्री तिरुपति बालाजी मंदिर में 1500 किलोग्राम घी प्रतिदिन लगता है, जिसके लिए लगभग 25 हजार दुधारू गोवंश पालना आवश्यक है। अतः उसकी व्यवस्था मंदिर प्रशासन करे।
4. भारत वर्ष के समस्त मंदिर भोग प्रसाद के लिए शुद्ध देशी गोवंश का पालन करें या अपनी देखरेख में स्थानीय जनता से निकटवर्ती गावों से करायें, जिससे भोग प्रसाद की पवित्रता बनी रहे।
5. प्राचीन काल से सनातन परम्पराओं में मंदिर मठों, गुरूकुलों में गोवंश का पालन–पोषण होता रहा है। गोवंश के चारण के लिए प्रत्येक गांव में गोचर भूमि होती है, हमारी राज्य सरकारों एवं केन्द्रीय सरकार से मांग है कि समस्त गोचर भूमि को मुक्त कराकर प्रशासन उसकी चारदीवारी, बाडाबन्दी व तारबन्दी कराकर रक्षित करे व निर्बाध रूप से गोवंश चरने की व्यवस्था करे।

गुरुओं की पवित्र एवं दिव्य भूमि अमृतसर, पंजाब में आयोजित अखिल भारतीय बैठक यह मांग करती है कि केन्द्र सरकार, राज्य सरकारों एवं देश के समस्त धर्माचार्यों से यह आग्रह करती है कि इस सकारात्मक क्रांति को सफल बनायें।

प्रस्तावक *– डॉ. कृष्णपाल सिंह उपाध्यक्ष*
अनुमोदक *– श्री वीरन्द्र धाकड़ (संरक्षक) एवं श्री सतीश चौधरी (इन्द्रप्रस्थ क्षेत्र–सह गोरक्षा प्रमुख)*

वैद्य नंदिनी भोजराज (एम.डी., आयुर्वेद)

मा. रामनाथ कोविंद जी द्वारा पंचगव्य संगोष्ठी का उद्घाटन

भारतीय गाय, जैविक कृषि एवम् पंचगव्य चिकित्सा पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन काशी हिंदू विश्व विद्यालय के शताब्दी कृषि विज्ञान प्रेक्षागृह में गत 21–22 सितंबर 2024 को किया गया। आयुर्वेद संकाय के कायचिकित्सा विभाग एवम् गोविज्ञान अनुसंधान केंद्र, देवलापार, नागपुर के संयुक्त तत्वावधान में यह आयोजन संपन्न हुआ। संपूर्ण भारत के विभिन्न राज्योंसे लगभग 300 प्रतिभागियों ने अपने शोधकार्य प्रस्तुत किए। देश–विदेश के वरिष्ठ वैज्ञानिक, शोध अध्येता समेत लगभग 500 से अधिक विद्यार्थी भी उपस्थित थे।

भारत के पूर्व राष्ट्रपति माननीय रामनाथ कोविंदजी के करकमलों द्वारा इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन किया गया। उन्होंने अपने वक्तव्य में देसी प्रजाति के गोवंश के गुणों की प्रशंसा की। मानव के स्वस्थ जीवन हेतु उनके गोबर–गोमूत्र की भूमि की अत्यावश्यकता बताई। प्रतिभागियों ने आयुर्वेद–पंचगव्य के क्षेत्र में चल रहे शोधकार्यों की जानकारी प्राप्त की। इस समय कोविंदजी के करकमलों द्वारा एक स्मारिका का विमोचन भी किया गया।

काशी विश्वविद्यालय के संस्थापक पूजनीय श्री मदन मोहन मालवीयजी की प्रतिमा को माल्यार्पण, दीपप्रज्वलन एवं धन्वन्तरी पूजन के साथ कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर एस. के. जैन द्वारा संगोष्ठी पर मार्गदर्शन किया एवम् पंचगव्य के विविध विषयों पर बी.एच.यू. में ही शोधकार्य कराने का आश्वासन भी दिया। संगोष्ठी की भूमिका कायचिकित्सा विभाग के प्रोफेसर डॉ. ओमप्रकाशजी सिंग ने रखी। श्री सुनील मानसिंहका ने पंचगव्य विषय की आवश्यकता एवम् देशभर में किये जा रहे इस विषय के कार्यों की जानकारी दी।

स्वास्थ्य मंत्री (उत्तर प्रदेश) के मा. दयालू जी ने भी काशी विश्वविद्यालय के इस आयोजन की सराहना की। डॉ. राकेश शर्मा (आयुष विभाग भारत सरकार) ने आयुर्वेद–पंचगव्य चिकित्सा की आवश्यक्ता पर बल दिया। डॉ.

संजय वाते, प्राचार्य अनुराग कॉलेज ऑफ फार्मेसी भंडारा ने एनके विद्यालय के प्रतिनिधियों के साथ गोमूत्र विषय में अपने शोधकार्य एवम् भविष्य की योजनाओं की जानकारी दी।

वैद्य नंदिनी भोजराज, गो विज्ञान अनुसंधान केंद्र की प्रधान वैद्य ने पंचगव्य चिकित्सा से लाभान्वित विभिन्न व्याधियों से ग्रस्त रूग्णों की जानकारी प्रस्तुत की। डॉ. मनीष देशमुख डी.एम.आय.एम. एस. सेवाग्राम, वर्धा ने NRPAC के माध्यम से पंचगव्य विषय पर चलाई जा रही वेबसाइट की जानकारी दी। मा. पुष्पहास बल्लाळजी ने पंचगव्य औषधी निर्माण क्षेत्रमें FDA नियमों के पालन के लिए अत्यावश्यक सूचनाएं दी। वे भारत सरकार के FDA विभाग के सेवानिवृत्त असिंस्टट कमिशन थे। डॉ. राजपालसिंह कश्यप जी ने कामधेनु गोमूत्र अर्क पर CIIMS, बजाजनगर नागपुर में चल रहे शोधकार्य की जानकारी प्रस्तुत की।

डॉ. रामस्वरूपजी चौहान जी ने कामधेनु गोमूत्र अर्क की व्याधि प्रतिकार क्षमता बढ़ाने का वैज्ञानिक पक्ष रखा।

काशी विश्वविद्यालय की प्रोफेसर सुनंदा पेठेकरजी ने उनके यहां चल रहे पंचगव्य से संबंधित शोधकार्यों की जानकारी दी। डॉ. सदाना जी ने A1-A2 दूध के शोधकार्य को प्रस्तुत किया। काशी विश्वविद्यालय के मेडिकल कॉलेज के रेडिओलॉजी के डॉक्टर्स, बायोटेक्नोलॉजी, फार्मेसी विभाग, IIT-BHU, कृषि विभाग पशुविज्ञान एवम् आयुर्वेद के विद्यार्थियों ने भी भाग लिया। अंजोरा विद्यापीठ के माजी कुलपती डॉ. नारायण दक्षिणकर जी ने भी पंचगव्य घृत का शोधकार्य एवम् देशी गोवंश की संख्या बढ़ाने की आवश्यकता पर जोर दिया। आभार प्रदर्शन कायचिकित्सा विभाग बी.एच. यू. के डॉ. मूर्तिजी ने किया। राष्ट्रगान के साथ ही कार्यक्रम का समापन हुआ।

गोचर भूमि से अतिक्रमण हटाने को लेकर धरना

स्वरूपगंज (राज.)। नितोड़ा गांव में गोचर भूमि से अतिक्रमण हटाने की मांग को लेकर पिछले लगभग 32 दिनों से धरना–प्रदर्शन अनवरत जारी है। ग्रामीणों का आरोप है कि प्रशासन की ओर से कुछ भूमि से अतिक्रमण हटाया गया, मगर कुछ प्रभावशाली लोगों के अतिक्रमण हटाने की बारी आई तो बारिश का बहाना बनाकर अतिक्रमण की कार्रवाई रोक दी गई। इससे ग्रामीणों में रोष व्याप्त हैं। ग्रामीणों का कहना हैं कि जब प्रशासन ने अतिक्रमण हटाने के लिए गांव में अभियान चलाया तो सभी का अतिक्रमण क्यों नहीं हटाया गया। कुछ प्रभावशाली लोगों को क्यों छोड़ दिया गया। ग्रामीणों ने कहा कि जब तक गांव की गोचर भूमि अतिक्रमण से मुक्त नहीं की जाएगी, तब तक धरना–प्रदर्शन अनिश्चित काल तक जारी रहेगा।

रात्रि में चौकीदारी

नितोड़ा में रात को चोरी, अवैध खनन एवं मवेशियों की चोरी को देखते हुए एवं ग्रामीणों पर हमले की आशंका से क्षेत्र के ग्रामीण अपने स्तर पर रात को चौकीदारी कर निगरानी कर रहे हैं।

गोतस्करी के आरोप में आठ हिरासत में, चौकी निलंबित

मिर्जापुर। उत्तर प्रदेश में मिर्जापुर जिले के शहर कोतवाली क्षेत्र में गोकशी के आरोप में पुलिस ने आठ लोगों को हिरासत में लिया है। पुलिस अधीक्षक ने जिला अस्पताल की पूरी चौकी के पुलिस कर्मियों को निलंबित कर दिया है। शहर कोतवाली थाना प्रभारी के खिलाफ जांच कमेटी गठित की गई है। इलाके में भारी संख्या में पुलिस के जवानों को तैनात किया गया है। गत माह रामबाग मोहल्ले में स्थित कुरेशी नगर में गोकशी कर बीफ बेचने का एक वीडियो सोशल मीडिया पर सामने आया, जिसके बाद नगर भाजपा अध्यक्ष सहित हिन्दू संगठन विरोध में आ गए। मामले की गंभीरता को देखते हुए खुद जिला पुलिस प्रमुख अभिनंदन जी ने सभी घरों की तलाशी कराई। एक मकान से बीफ मिला है। हालांकि मांस को जांच के लिए भेजा गया है। प्रतिबंधित मांस बिक्री का मामला प्रकाश में आते ही हिन्दू संगठन सक्रिय हो गए। संगठनों ने पूरा मामला पुलिस अधीक्षक के संज्ञान में डालकर कारवाई की मांग की।

उधर भाजपा विधायक रत्नाकर मिश्र ने गो मांस बिक्री पर रोक के बावजूद बीफ बेचने के मामले पर पुलिस अधीक्षक से कठोर कार्रवाई के लिए कहा।

चौकी प्रभारी व सात पुलिसकर्मी निलंबित

पुलिस अधीक्षक अभिनंदन जी ने बताया कि पुलिस चौकी के पास बीफ बेचने के मामले में पूरी चौकी को निलम्बित कर दिया गया है। उन्होंने बताया कि चौकी प्रभारी हरिशंकर यादव सहित सात अन्य पुलिस कर्मियों को निलंबित किया गया जिसमें मोहम्मद अंसार, प्रवीण कुमार, सुधीर सहाय, सतीश यादव, संजय यादव, प्रेम प्रकाश, अजय गौतम और संजय सिंह शामिल हैं।

प्रसाद की जांच

सुप्रीम कोर्ट ने तिरुपति मंदिर के लड्डुओं में पशुओं की चर्बीयुक्त घी का इस्तेमाल किए जाने के मामले में विशेष जांच दल का गठन करके आंध्र सरकार की ओर से की जाने वाली जांच को लेकर उठ रहे संदेह को खत्म करने का काम किया है। आशा की जानी चाहिए कि पांच सदस्यीय विशेष जांच दल इस मामले में **दूध का दूध और पानी का पानी** करने में सफल होगा। ऐसा होना भी चाहिए, क्योंकि हिंदुओं की आस्था का प्रश्न है। तिरुपति मंदिर के प्रसाद को तैयार करने में अशुद्ध घी का इस्तेमाल किए जाने का आंध्र के मुख्यमंत्री का आरोप बहुत ही सनसनीखेज था। इस आरोप ने हिंदू समाज को विचलित किया, क्योंकि कोई यह सोच भी नहीं सकता कि विश्व प्रसिद्ध तिरुपति मंदिर के प्रसाद में जिस घी का इस्तेमाल होता है, उसमें पशुओं की चर्बी प्रयुक्त होती है। ऐसा होने की आशंका इसलिए गहरा गई थी, क्योंकि यह सामने आया था कि घी की आपूर्ति करने वाली कंपनी उसे लगभग चार सौ रुपये प्रति किलो में उपलब्ध कराती थी। इतना सस्ता घी तो तभी मिल सकता है, जब उसमें कोई मिलावट की जाए, क्योंकि दूध की औसत कीमत 45–50 रुपये प्रति लीटर है और एक किलो घी तैयार करने में 20 से 25 लीटर दूध चाहिए होता है। स्पष्ट है कि यह जानने की जरूरत है कि तिरुपति मंदिर में प्रसाद बनाने के लिए इतना सस्ता घी कैसे उपलब्ध कराया जा रहा था और यदि उसमें मिलावट की जा रही थी तो किस चीज की? यदि देश में कहीं पर भी पांच–छह सौ रुपये में एक किलो घी उपलब्ध हो रहा है तो वह शुद्ध नहीं हो सकता। प्रश्न यह है कि इसकी जांच कौन करेगा कि विभिन्न कंपनियां पांच –छह सौ रुपये में घी कैसे उपलब्ध करा रही हैं?

अपने देश में खाने–पीने की वस्तुओं में मिलावट कोई नई बात नहीं है। खाने–पीने की वस्तुओं में मिलावट रुके, इसके लिए केंद्र और राज्य सरकारों को भी अपने स्तर पर कुछ करने की जरूरत है। इससे संतुष्ट नहीं हुआ जा सकता कि विभिन्न एजेंसियां खाने –पीने की वस्तुओं में मिलावट को रोकने के लिए सक्रिय रहती हैं, लेकिन उनकी सक्रियता निष्प्रभावी ही साबित हो रही है। तिरुपति मंदिर का मामला केवल यह जानने तक सीमित नहीं रहना चाहिए कि उसके प्रसाद में पशुओं की चर्बी वाले घी का इस्तेमाल होता था या नहीं? इस मामले ने यह प्रश्न भी खड़ा किया है कि आखिर हिंदुओं के मंदिरों का संचालन सरकारों को क्यों करना चाहिए? यदि अन्य समुदायों को अपने धार्मिक स्थलों के संचालन का अधिकार मिला हुआ है तो ऐसा ही अधिकार हिंदू समाज को क्यों नहीं मिलना चाहिए? यह वह प्रश्न है, जो अनुत्तरित नहीं रहना चाहिए, क्योंकि कई ऐसे मामले सामने आ चुके हैं कि राज्य सरकारों की ओर से संचालित हिंदू मंदिरों की देख–रेख सही तरीके से नहीं हो रही है।

सम्पादकीय लेख
– दैनिक जागरण

कुमकुम चड्ढा (स्वतंत्र लेखिका)

तिरुपति लड्डू पर प्रश्नचिह्न?

तिरुपति लड्डू को लेकर विवाद थमने का नाम नहीं ले रहा है। बल्कि यह विवाद हर मिनट कोई नया मोड़ ले रहा है। लड्डू से जुड़े इस विवाद के अलावा, याचिकाकर्ता न्याय की गुहार लगा रहे हैं। अब तक, अदालत में कम–से–कम चार जनहित याचिकाएं दायर की जा चुकी हैं, जिनमें से पहली हिंदू सेना द्वारा दायर की गई है। इस याचिका में प्रसाद में कथित रूप से मिलाए गए मिलावटी घी, जिसमें **बीफ टैलो** और जानवरों की चर्बी का इस्तेमाल हुआ है, की जांच के लिए एक विशेष जांच दल की मांग की गई है। एक और जनहित याचिका एक मीडिया कर्मी द्वारा दायर की गई है, जिसमें इस संभावित आपराधिक साजिश और भ्रष्टाचार की जांच के लिए सीबीआई या किसी अन्य स्वतंत्र केंद्रीय एजेंसी से जांच की मांग की गई है। इसके अलावा, मंदिरों और धार्मिक स्थलों के प्रबंधन की पारदर्शिता और धार्मिक परंपराओं के पालन को सुनिश्चित करने के लिए एक सेवानिवृत्त न्यायाधीश नियुक्त करने की मांग की गई है।

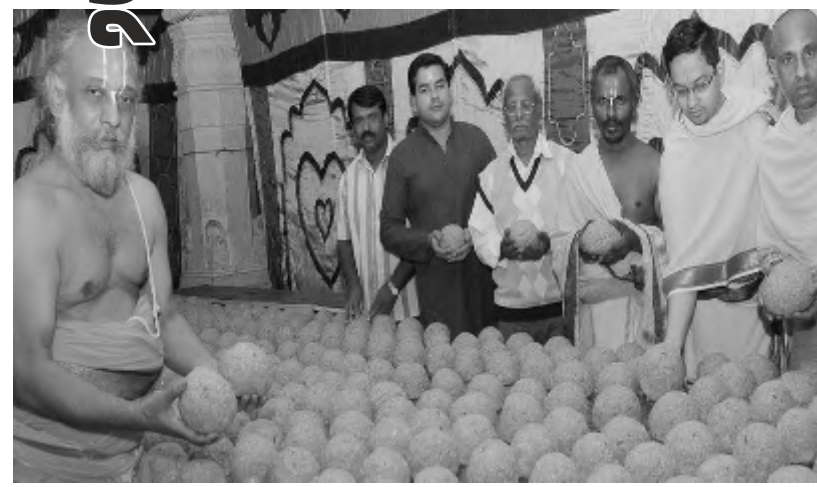

इस विवाद के केंद्र में वाई. एस. आर. कांग्रेस पार्टी भी है, जिसने सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया है। इसके नेता सुब्बा रेड्डी ने भी एक जनहित याचिका दायर की है, जिसमें सुप्रीम कोर्ट द्वारा निगरानी में इस विवाद की जांच की मांग की गई है। रेड्डी की याचिका ने घी में मिलावट के आरोपों को ''बेतुका'' करार दिया है और कहा है कि यह सभी केवल अफवायें हैं। हाल ही में, नायडू ने आरोप लगाया था कि तिरुपति तिरुमाला मंदिर के लड्डू प्रसाद में जानवरों की चर्बी मिलाई गई है, जिससे इसकी पवित्रता पर सवाल उठ खड़ा हुआ है। नायडू की तेलुगु देशम पार्टी केंद्र में नरेंद्र मोदी की सरकार की एक प्रमुख सहयोगी है।

इस बात पर कोई दो राय नहीं हो सकती कि यह मुद्दा राजनीतिक दल जो एक–दूसरे से लड़ रहे हैं, उनके द्वारा कुछ ज्यादा ही बढ़ा कर पेश किया गया है। यह विवाद तब भड़का जब चंद्रबाबू नायडू ने कहा कि प्रयोगशाला की रिपोर्ट में पुष्टि की गई है कि राज्य के प्रसिद्ध तिरुपति मंदिर में देवता को चढ़ाए जाने वाले और फिर प्रतिदिन भक्तों को वितरित किए जाने वाले लड्डू में जानवरों और वनस्पति तेल की मिलावट है। रिपोर्ट में कहा गया था कि परीक्षण किए गए नमूनों में **बीफ टैलो, सूअर की चर्बी और मछली का तेल** मिला है।

यह परीक्षण गुजरात के आनंद स्थित नेशनल डेयरी डेवलपमेंट बोर्ड की एक प्रयोगशाला – सेंटर फॉर एनालिसिस एंड लर्निंग इन लाइव स्टॉक एंड फूड में किया गया था। स्थिति बेहद बिगड़ गई और मंदिर प्रबंधन व अधिकारी स्थिति को संभालने में जुट गए हैं, लेकिन पहले लड्डू की कहानी जानते हैं। तिरुपति लड्डू, जिसे **श्रीवरी लड्डू** भी कहा जाता है, आंध्र प्रदेश के बालाजी मंदिर में भक्तों को

दिया जाने वाला मुख्य प्रसाद है। यह मंदिर **भगवान श्री वेंकटेश्वर** को समर्पित है। तिरुपति लड्डू प्रसाद में बेसन, चीनी, काजू, किशमिश, इलायची और कपूर सहित अन्य सामग्रियां होती हैं। इसे शुद्ध घी में पकाया जाता है और भक्त इसे भगवान के आशीर्वाद के रूप में ग्रहण करते हैं और अपने घर ले जाकर अन्य लोगों के साथ साझा करते हैं। **इस लड्डु को बनाने का श्रेय कल्याणम अयंगर** को दिया जाता है। बाद में उनके परिवार ने इस परंपरा को आगे बढ़ाया और इसे प्रसिद्ध मंदिर का मुख्य प्रसाद बना दिया।

2001 तक, मंदिर के कर्मचारी लड्डू तैयार करते थे, लेकिन बाद में मांग बढ़ने के कारण, मंदिर प्रबंधन ने एक रसोई की स्थापना की जिसे **पोटू** कहा जाता है, जहां लड्डु बनाए जाते हैं। जब एक रसोई पर्याप्त नहीं थी, तो एक और रसोई बनाई गयी। तीन प्रकार के लड्डू आमतौर पर तीर्थयात्रियों को परोसे जा रहे थे। और क्या प्रसाद को ''शुद्ध'' करने के लिए कोई कदम उठाए गए, और अगर हां, तो क्या समय रेखा थी? यह पूरा विवाद राजनीतिक प्रतिशोध लेने के लिए खड़ा किया गया है। रेड्डी और अन्य लोग नायडू की आलोचना कर रहे हैं कि वह अपने शासन के पहले 100 दिनों में किए गए वादों को पूरा करने में असफल रहे हैं और असली मुद्दों से ध्यान भटकाने के लिए इस तरह के हथकंडे अपना रहे हैं।

भले ही यह राजनीति हो, लेकिन सच्चाई यह है कि यह बेहद ही खराब राजनीति है। आस्था और धर्म को राजनीति से ऊपर होना चाहिए, और जब इस पर सवाल उठते हैं तो हर एक भक्त की आस्था डगमगा जाती है। इससे बुरा कुछ नहीं हो सकता। इसलिए जब याचिकाकर्ता और सांसद सुब्बा रेड्डी कहते हैं कि नायडू के आरोपों ने देवता की प्रतिष्ठा को ठेस पहुंचाई है और भक्तों पर तिरुपति में प्रसाद के रूप में तैयार किए जाते हैं – **अस्थानम लड्डू, कल्याणोत्सवम लड्डु और प्रोक्तम लड्डू।** अस्थानम लड्डू विशेष त्यौहारों के अवसरों पर तैयार किए जाते हैं और विशेष मेहमानों को वितरित किए जाते हैं, जबकि कल्याणोत्सवम लड्डु उन लोगों को दिए जाते हैं जो विशेष धार्मिक अनुष्ठान में भाग लेते हैं। दूसरी ओर प्रोक्तम लड्डू आम भक्तों को वितरित किए जाते हैं।

नायडू का पवित्र लड्डु की शुद्धता और मिलावट के बारे में आरोप एक बड़ा झटका है और इसने बहुत ही महत्वपूर्ण प्रसाद की पवित्रता पर सवाल खड़ा कर दिया है। नायडू ने अपने पूर्ववर्ती वाई.एस. जगन मोहन रेड्डी पर आरोप लगाया, तो पूर्व मुख्यमंत्री ने इसका तीखा जवाब देते हुए कहा कि नायडू ''झूठ बोलने के आदी'' हैं। रेड्डी ने दावा किया कि उनके शासन में किसी प्रकार का उल्लंघन नहीं हुआ और कहा कि तथ्य ''राजनीतिक स्वार्थों'' के लिए तोड़–मरोड़े गए हैं।

इसके अलावा, विवाद को सोच समझकर इसी वक्त उठाने पर भी सवाल किये जा रहे हैं क्योंकि प्रयोगशाला की रिपोर्ट जुलाई में आ गयी थी। फिर नायडू ने इसे सितंबर तक क्यों ठंडे बस्ते में रखा? राज्य कांग्रेस अध्यक्ष वाई. एस. शर्मीला ने यही सवाल उठाया : ''जब सरकार को जुलाई में ही प्रयोगशाला रिपोर्ट मिल गई थी तो नायडू ने इसे सार्वजनिक करने में इतना समय क्यों लिया?'' उन्होंने आरोप लगाया कि यह ''राजनीतिक मतलब के लिए किया गया है ।''

राजनीति करने की नायडू की प्रवृत्ति के समर्थक हो सकते हैं, लेकिन धर्म को इस प्रतिस्पर्धा में घसीटना एक परिपक्व नेता के लिए अनुचित है। अगर यह चुनावी समय के आसपास होता तो राजनीतिक दबावों को समझा जा सकता था, लेकिन सत्ता संभाले अभी कुछ ही महीने हुए हैं, और इस वक्त उन्हें राज्य में सुधार के लिए काम करना चाहिए। नायडू ने जून में मुख्यमंत्री पद की शपथ ली थी। नायडू अपने राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी रेड्डी को बदनाम करने का यह मौका कैसे जाने दे सकते थे? यह तय है कि उन्होंने इस मौके का पूरा फायदा उठाया है और जब भाजपा भी इसमें कूद पड़ी, तो उन्हें पर्याप्त समर्थन मिल गया। जैसा कि सर्वविदित है, केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा ने आंध्र प्रदेश सरकार से इस मामले पर रिपोर्ट मांगी और उसकी जांच के बाद उचित कार्यवाही करने का वादा किया। यह सही हो सकता है, लेकिन इस पूरे विवाद ने मंदिर प्रबंधन को संकट में डाल दिया है। इससे भी बुरी बात यह है कि इसने भक्तों की आस्था को हिला दिया है। वहीं लड्डू, जिसे वे पसंद करते थे और जिसे पाने के लिए हाथ बढ़ाते थे, अब एक तरह से संदिग्ध हो गया है। यह कहना गलत नहीं होगा कि जब भी कोई इसे पाने के लिए अपने हाथ बढ़ाएगा तो यह प्रश्न स्पष्ट रूप से उसके दिमाग में आयेगा, क्या यह शुद्ध है? और इससे भी महत्वपूर्ण बात कि क्या यह शाकाहारी है?

Dr. Aastha Pathak

BOVINE MASTITIS

Bovine mastitis is a condition typified by the persistent and inflammatory reaction of the udder tissue due to either physical trauma or infections caused by microorganisms. It is a potentially fatal mammary gland infection, that is most common in dairy cattle worldwide. It is a disease that is known to cause the greatest loss to the dairy industry.

Causes

There is a large cohort of microorganism species that are known to cause mastitis. These range from virus, mycoplasma, fungus and bacteria.

Bacterial organisms known to cause mastitis are Pasteurella multocida, Staphylococcus aureus; Str. Zooepidemicus; Str. agalactiae; Str. pyogenes; Str. faecalis; Mycobacterium bovis; Klebsiella spp; Brucella abortus; Pseudomonas pyocyaneus; E.coli; Leptospira Pomona, etc.

Fungal entities responsible for mastitis are Aspergillus fumigatus; A.midulus; Candida spp; Trichosporon spp, etc.

Physical injury to the mammary region, poor hygiene and/or trauma, also cause this condition.

Symptoms

The clear sign of mastitis is inflammation of the udder that turns into a red and hard mass. The swollen mammary gland is hot and the mere touching causes pain and discomfort to the animal. Animals do not allow touching of the udder even kicking to prevent milking. If milked the milk is usually tainted with blood clots, foul smelling brown discharge and milk clots.

The milk yield totally stops or is severely

restricted. Body temperature of the animal increases. Other symptoms are lack of appetite, hindrance in mobility due to swollen udder and pain. The dairy animal develops sunken eyes, suffers from digestive disorders and diarrhoea.

Infected cattle are severely dehydrated and suffer from weight loss. In cases of severe infection there is formation of pus in the infected udder. Mastitis can degenerate to Toxaemia or Bacteraemia and even cause death as a result of acute infection.

Mastitis can be detected at an early stage (sub clinical) before the symptoms appear, through California Mastitis Test (CMT). It is a quick test that can be performed on small milk samples. Early detection helps in preventing the progress of the disease into clinical stages and causing heavy losses to dairy farmers.

Prevention

It is better to prevent mastitis before it becomes a problem. The below measures can go a long way in prevention :

- ❖ Provide clean, dry and adequate bedding for cows to lie.
- ❖ Cows should be clean while entering the milking area.
- ❖ Use different cloth or paper towel for cleaning the teats on each cow.
- ❖ Teats should be completely dry and clean before milking.
- ❖ Use germicidal teat dips after milking.

Feed the cows after milking so that they don't lie down immediately. This prevents the entry of microorganisms into teat canals that are still open from milking.

Treatment

First aid once mastitis has been detected involves applying ice cubes on the udder surface. The infected milk from infested teat should be drained out thrice a day and safely disposed. A composition of 5% phenol can be included to the infected milk to ensure hygienic disposal.

While milking the herd, strict attention must be paid to first milking healthy, non-infected cows and subsequently those infected.

The infected and non-responsive quarter should be dried up, permanently. Calves should be prevented from suckling on the infected teat. A certified veterinary doctor must be consulted, and a course of antibiotic treatment must commence immediately.

Sanjay Raman "Vidyavachaspati"

MAINTAINING AN INDIAN COW SHED
A GUIDE TO PROPER HYGIENE AND ANIMAL WELFARE

Cows are considered sacred animals in Indian culture and are widely revered. In fact, cow rearing is considered an integral part of Indian agriculture and cow dung and urine are considered valuable resources for various purposes, including fertilizer, fuel, and medicine. Therefore, maintaining a clean and hygienic cow shed is crucial for ensuring the health and welfare of cows and the quality of their produce. Here are some tips for maintaining an Indian cow shed:

Keep the shed clean and dry: A clean and dry shed is essential for maintaining good hygiene and preventing the spread of disease. Remove manure and urine-soaked bedding daily and replace it with fresh bedding. Use a broom or a scraper to remove any debris or dirt from the floor and walls of the shed. Make sure that the shed is well-ventilated to prevent the buildup of moisture.

Provide proper lighting: Cows need proper lighting to maintain their circadian rhythm and to encourage them to eat and drink. Install enough lighting fixtures in the shed to ensure that the cows can see their surroundings and feed troughs.

Ensure proper ventilation: Proper ventilation is essential for maintaining good air quality in the shed and preventing the buildup of harmful gases. Provide enough windows and vents to allow fresh air to circulate freely. Make sure that the ventilation system is designed in such a way that it does not cause drafts or cold spots.

Provide clean water and feed: Cows need clean and fresh water to drink, and a well-balanced diet to maintain their health and productivity. Make sure that the water troughs and feeders are cleaned and refilled regularly. Avoid feeding cows moldy or spoiled feed as it can cause digestive problems and illness.

Monitor the cows' health: Regularly monitor the cows' health to detect any signs of illness or injury. Provide prompt medical attention to cows that are sick or injured. Isolate sick cows from the rest of the herd to prevent the spread of disease.

Properly dispose of waste: Proper disposal of cow waste is crucial for maintaining good hygiene and preventing the spread of disease. Use cow manure and urine as a natural fertilizer for crops, or sell it to farmers for use in their fields. Avoid dumping cow waste in water bodies or on public roads.

Train and educate the staff: Train and educate the staff responsible for maintaining the cow shed on proper hygiene and animal welfare practices. Provide them with the necessary tools and equipment to do their job effectively. Encourage them to report any issues or concerns related to the cows' health and welfare.

In conclusion, maintaining a clean and hygienic cow shed is essential for ensuring the health and welfare of cows and the quality of their produce. By following the above tips, you can ensure that your cows are healthy, productive, and well-cared for.

हार्दिक निवेदन

सभी गोभक्त–गोप्रेमी बंधुओं से करबद्ध अनुरोध है कि वे इस पत्रिका का सदस्य अवश्य बनें और अन्य गोभक्तों को भी सदस्य बनायें। कृपया सभी लोग अपना वार्षिक अथवा आजीवन सदस्यता शुल्क निम्नलिखित बैंक व खाता नंबर में जमा कराएं –

पंजाब नेशनल बैंक, बसंत लोक, नई दिल्ली

खाता नम्बर - 04072010038910 IFSC CODE : PUNB0040710

नोट – शुल्क "भारतीय गोवंश रक्षण संवर्द्धन परिषद" के नाम पर जमा करें। सम्पर्क सूत्र : 011.26174732

pnb punjab national bank
...the name you can BANK upon!

अब आप यूपीआई के माध्यम से भी पत्रिका का शुल्क जमा कर सकते हैं

SCAN & PAY USING ANY BHIM UPI APP

9958710672m@pnb

MERCHANT: BHARTIYA GOVANSH RAKSHAN SAMVARDHAN PARISHAD

BHIM BHARAT INTERFACE FOR MONEY | UPI UNIFIED PAYMENTS INTERFACE

"LPC DELHI, DELHI PSO, DELHI RMS, DELHI-6"
Email : gosampada@gmail.com
website : www.vhp.org

Registered No. DL-SW-01/4027/24-26
RNI No. 69508/98 प्रस्तुति : 13–14
प्रकाशन तिथि : 11 अक्टूबर, 2024

महाराष्ट्र में गोमाता 'राज्यमाता' घोषित

महाराष्ट्र सरकार ने वैदिक काल से देशी गायों के महत्व को देखते हुए गत माह उन्हें *'राज्यमाता–गोमाता'* घोषित किया। मुख्यमंत्री शिंदे जी ने इसकी जानकारी दी। राज्य के कृषि, डेरी विकास, पशुपालन एवं मत्स्य पालन विभाग द्वारा जारी अधिसूचना में कहा गया है कि इस कदम के पीछे अन्य कारकों में मानव पोषण में देशी गाय के दूध का महत्व, आयुर्वेदिक एवं पंचगव्य उपचार के लिए उपयोग और जैविक खेती में गाय के गोबर से बने खाद का इस्तेमाल शामिल है। यह घोषणा ऐसे समय में की गई है, जब राज्य विधानसभा चुनाव जल्द ही होने की संभावना है। एक अधिकारी ने बताया कि राज्य सरकार का यह फैसला भारतीय समाज में गाय के आध्यात्मिक, वैज्ञानिक और ऐतिहासिक महत्व को रेखांकित करता है। उन्होंने कहा कि यह कदम भारत के सांस्कृतिक परिदृश्य में सदियों से गायों की अभिन्न भूमिका को भी प्रतिपादित करता है।

सीरी के वैज्ञानिकों ने विकसित किए एआइ उपकरण

मिनटों में पता लग जाएगा दूध शुद्ध है या मिलावटी

पिलानी (राज)। केन्द्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (सीरी) के वैज्ञानिकों ने दूध में हो रही मिलावट और शुद्धता की पहचान करने के लिए दो नए उपकरण तैयार किए हैं। इन्हें एआइ से जोड़ा गया है। इनके इस्तेमाल से कुछ ही क्षणों में यह पता लग जाएगा कि दूध शुद्ध या उसमें कोई मिलावट की गई है। दोनों नवीनतम दुग्ध प्रौद्योगिकियों का नाम एआइ–सक्षम दूध घनत्व प्रणाली और एआइ–सक्षम क्षीर स्कैनर रखा गया है। दोनों टेक्नोलॉजी सीरी में आयोजित एक कार्यक्रम में कंपनी को हस्तांतरण कर दिया गया। संबंधित कंपनी जल्द इनका उत्पादन शुरू कर इन उपकरणों को बाजार में उपलब्ध करवाएगी।

अत्याधुनिक प्रणालियां

सक्षम दूध घनत्व प्रणाली और **सक्षम क्षीर स्कैनर** दो अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी हैं, जिन्हें डेयरी उत्पादों की गुणवत्ता को सुधारने के लिए विकसित किया गया है। सक्षम दूध घनत्व प्रणाली दूध के घनत्व का सटीक मापन करती है। इससे दूध की शुद्धता और गुणवत्ता का आकलन करना आसान हो जाता है। सक्षम क्षीर स्कैनर दूध में मिलावट की पहचान करने के लिए विकसित किया गया है, जो एआइ का उपयोग करके तुरंत मिलावट का पता लगाता है। यह दोनों तकनीक डेयरी उद्योग को उन्नत गुणवत्ता नियंत्रण समाधान प्रदान करती हैं, जिससे दूध की शुद्धता सुनिश्चित होती है।

प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र प्रसाद सिंहल ने रायल प्रेस,
बी 81, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली से मुद्रित कर भारतीय गोवंश रक्षण संवर्धन परिषद् (विहिप)
संकटमोचन आश्रम, सेक्टर-6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-22 के लिए प्रकाशित की। संपादक - देवेन्द्र नायक